RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 15 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 15 सितम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

शरद ऋतु में वर्षा ऋतु के घाव भरने हैं

कार्यालय प्रतिनिधि

मानसून में इस बार हुए ताबड़तोड़ बारिश ने पहाड़ों में जिस प्रकार के मलबा बोल्डरों को ढुरकाने का काम किया उससे भारी नुकसान हुआ है। अभी तक भी पहाड़ के प्रमुख मार्गों का हाल सोचनीय है, न जाने किस जगह मलबा ढुरक पड़े। जिन स्थानों पर बादल फटने, नदियों के उफनाने से तबाही मची वहाँ सामान्य होने में बहुत समय लगेगा। जिन लोगों को इस मौसम में पीड़ा मिली उन्हें उबरने में भी समय चाहिये।

पहाड़ों में रामलीला का सीजन है लेकिन शरद ऋतु के इस मौके पर अभी वर्षा ऋतु के घाव भरने हैं। तराई भाबर में भी पानी निकासी के रास्ते सुधार करना जरूरी है जिन्हें कब्जा लिया गया है। क्योंकि शहर बुरी तरह जलमग्न रहे थे। (शेष पृष्ठ 3 पर)

रिलकोट फोटो- केशव भट्ट

वह यात्रा जिसमें खूब चहल-पहल होती थी

बाला सिंह मर्तोलिया से बातचीज

देवीबगड़ का बचपन खूब जोर का था

ताऊ माधो सिंह जड़ी बूटी के जानकार थे

डॉ.पंकज उप्रेती

भारत-तिब्बत व्यापार और माइग्रेशन होने वाले ग्रामों के पुराने दिन कितने कठिन और रोमांचक थे, उन यादों को समेट लोग आज भी हमारे बीच हैं। अपने बचपन की ऐसी की रोचक यादों के साथ बाला सिंह मर्तोलिया की आँखों में पुराने दृश्य तैरते हुए महसूस किये जा सकते हैं। वह बताते हैं कि उनके परिवार का मुख्य कार्य व्यापार और भेड़-बकरी पालन था। देवीबगड़ में उनका बचपन बीता, जहाँ पशुपालन का मस्त कारोबार था।

जोहार के खीम सिंह मर्तोलिया के परिवार में माधो सिंह और मेघ सिंह हुए। माधो सिंह के सुपुत्रों में रघुनाथ सिंह, स्व. ईश्वर सिंह ओर त्रिलोक सिंह जबकि मेघ सिंह के सुपुत्र बाला सिंह जी हैं। गर्मियों में जोहार मर्तोली और जाड़ों में देवीबगड़ (बागेश्वर) में यह संयुक्त परिवार जाता था। मुनस्यारी तो इसके बीच हुआ ही। अपनी इन्हीं सारी यादों को ताजा करते हुए बाला सिंह मर्तोलिया बताते हैं कि परिवार के साथ बचपन में इधर-उधर जाने का उन्हें जो अवसर मिला वह बच्चों के लिये खेल सा था। रेड़गाडी,

शेष पृष्ठ 2 पर

आयुध निर्माणियों की सुनवाई कर रास्ता निकालना चाहिये

देहरादून। आयुध निर्माणियों की मांगों को लेकर जिस प्रकार का अन्देशा पहले से लगाया जा रहा था, वही हुआ है। देश की 41 फक्ट्री के 70000 कर्मचारियों की ओर से मांग है कि उनकी सुनवाई हो।

अखिल भारतीय नों गैजेटेड अधिकारी संघ अध्यक्ष नोर्थ जॉन सदस्य राष्ट्रीय परिषद सदस्य जेसीएम चतुर्थ ओएलएक्स रायपुर गिरीश चन्द्र उप्रेती कहते हैं कि आयुध निर्माणियों के गिरती हालत को देखते हुए इन पर ध्यान दिया जा ना चाहिये। सरकार के फैसले से देश की सुरक्षा के साथ कर्मचारियों के भविष्य की सुरक्षा पर इसका असर है। पुरानी सरकारों ने देश के अन्दर जिस तरह से उद्योग लगाए और आज की सरकार इन उद्योगों का निजीकरण कर रही है इससे इन उद्योगों की दशा और दिशा प्रतिदिन खराब हो रही है। 1801 में पहले आयुध निर्माणी कोलकाता में बनी वह निर्माणी ब्रिटिश सरकार का दबदबा था, देश आजादी के बाद भारत सरकार रक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत रही हैं।

भारत के मीलपत्थर

व्यास ने अन्याय किया है गान्धारी के साथ

सूर्यकान्त बाली

कुरुवंश की पाँच प्रख्यात कुलवधुओं में गान्धारी का स्थान जितना महत्वपूर्ण रहा होगा, वेदव्यास ने उस महत्व को अपने प्रबन्ध काव्य में उस तरह से रेखांकित नहीं किया है। गान्धारी धृतराष्ट्र जैसे काइयाँ और स्वार्थी राजा की धर्मपत्नी थी और दुर्योधन जैसे अहंकारी और अनावश्यक रूप से अतिमहत्वाकांक्षी व कुटिल पुत्र की माँ भी। यह गान्धारी का दुर्भाग्य ही था कि ऐसे वातावरण का अंग बन गई जिसके लायक वह अपने स्वभाव से नहीं थी। महाभारत में आप स्थान स्थान पर पाएँगे कि जब-जब दुर्योधन किसी कुटिल योजना का विस्तार करता है तो धृतराष्ट्र उसे शुरू से मना करते हुए भी या मना करने का नाटक करते हुए भी अन्ततः सहमत हो जाते हैं। चाहे वारणावत के लाक्षागृह में पाण्डवों को भेजने की बात हो, युधिष्ठिर को जुए के लिए बुलाना हो या फिर कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध की तैयारियाँ करनी हों, धृतराष्ट्र ने सदा सद्बुद्धि देने का स्वांग किया, या बहुत ही कमजोर प्रयास किया। इतना ही नहीं, ऐसे हर मौके पर धृतराष्ट्र ने महात्मा विदुर की सलाह भी नहीं मानी। पर क्या गान्धारी ने भी अपने उपदेशों और निर्णयों में ऐसी चालाकी की होगी?

नहीं की होगी, ऐसा उन पाँच या छह प्रसंगों मालूम पड़ जाता है जो गान्धारी के बारे में एक लाख श्लोकों और अठारह पर्वों वाली महाभारत में मिलते हैं। इन कुछेक प्रसंगों से ही निष्कर्ष यह उभरता है कि गान्धारी एक बहुत ही श्रेष्ठ चरित्र की मालिक थी जो धृतराष्ट्र के राजप्रासाद में जीवन नैतिक सत्ता का प्रतीक थी। तब के तनाव भरे माहौल में वह शान्ति और सात्विकता की एक सम्वेदनशील प्रतिमा दिखाई देती है। इसलिए ऐसा मानने को सहसा मन नहीं करता कि तब के वातावरण में, जब कुरुकुल का राजप्रासाद घटनाओं और तरह-तरह की सक्रियतता का केन्द्र बना हुआ था, गान्धारी उन सबकी मूकदर्शक बनी रही होगी। गान्धारी के स्वभाव को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि वह पति धृतराष्ट्र और पुत्र दुर्योधन की अनैतिक और कुटिल कारगुजारियों की समर्थक रही होगी। मूकदर्शक भी नहीं रही होगी और समर्थक भी नहीं रही होगी तो उसने विरोध किया होगा। गान्धारी के चरित्र को देखकर यही लगता है। इसलिए हैरानी है कि क्यों हर पात्र को विस्तार से दिखाने में प्रवीण वेदव्यास और उनकी टीम ने गान्धारी को पूरे घटनाक्रम में पिछली बैंचों पर बिठा दिया?

गान्धारी में तेज और उत्साह था, जिसे आज की भाषा में 'इनिशिएटिव' कहते हैं, इसका साक्षी वह सन्दर्भ है जब वह पहली बार महाभारत में एक फैसला करती दिखाई गई है। आदि पर्व के 109 वें अध्याय में में गान्धारी का धृतराष्ट्र के साथ विवाह प्रसंग है। वह गान्धार के राजा सुबल की पुत्री है, सुन्दर है और शिव की उग्र तपस्या कर चुकी है। ये तीनों बातें क्या कह रही है? यह कि गान्धारी में ऐसा कोई दोष नहीं था कि उसे धृतराष्ट्र जैसे जनमान्ध के साथ, जो तब राजा भी नहीं था, विवाह को बाध्य होना होना पड़ता। ऐसा कुछ नहीं था। जो लड़की शिव की उग्र तपस्या कर सकती है, उसकी संकल्प शक्ति और नैतिकता के बारे में और कुछ कहने लिखने की जरूरत नहीं है। पर जब उसे मालूम पड़ा कि उसका विवाह धृतराष्ट्र जैसे जन्मान्ध से निश्चित किया जा रहा है तो उसने स्वयं ही यह तय कर लिया कि वह भी अब अपने को अन्धों जैसा बनाकर पति जैसी हो जाएगी। महाभार कार कहता है कि उसने यह कहते हुए ऐसा किया कि विवाह के बाद वह पति के दोषों को नहीं देखना चाहती। पर जाहिर है कि कारण यही नहीं रहा होगा। कहीं न कहीं भावी पति के प्रति करुणा व अनुराग का अतिरेक भी रहा होगा जिसने गान्धारी को वैा करने को प्रेरित किया। बहस हो सकती है कि गान्धारी ने ठीक किया या गलत किया। बहस हो सकती है कि भावी पति के प्रति अपनी निष्ठा को वह किसी अन्य तरह से भी व्यक्त कर सकती थी और कि आँखों पर पट्टी बाँध लेने की अपेक्षा आँखों को और ज्यादा चौकस रखना बेहतर विकल्प होता। परन्तु यह तो फिर भी निर्विवाद है कि गान्धारी का फैसला एक बड़ा फैसला था जिसमें से एक ध्वनि यह निकलती है कि फैसले लेने को अद्भुत सामर्थ्य उसमें थी और वह नैतिक मानदण्डों पर विकट निर्णय ले सकती थी।

इसके बाद गान्धारी के सौ पुत्रों के प्रसंग महाभारत (आदिपर्व, अध्याय 114) में मिलता है। उसका पूरा स्वरूप ऐसा है कि उस पर बहस हम जैसे विश्लेषकों के बीच हो ही नहीं सकती। सिर्फ शरीर विज्ञानी और शल्य चिकित्सक ही उसके बारे में कोई विज्ञानसम्मत राय कायम कर सकते है। और गान्धारी के सौ या निन्यानवे पुत्रों के इतिहास की वास्तविकता से इसका कोई मेल बिठा सकते हैं। पर उसके बाद दो स्थानों पर गान्धारी का मंच पर आना और जबर्दस्त तरीके से आना उसके स्वभाव और सोच की दिशा

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

वर्तमान उच्चशिक्षा का सच उजागर हो चुका है

तेजी से बदल रही दुनिया में शिक्षा व्यवस्था कैसी हो, इसको लेकर कई प्रयोग हो चुके हैं और देखने में आ रहा है कि आपाधापी और प्रतियोगिता की इस दुनिया में परम्परागत पठन-पाठन के अलावा कई दूसरे रास्ते अपनाए जाने लगे हैं। कई ऐसे विषय हैं जिनके बारे में अभी आश्चर्य होता है।

शिक्षा व्यवस्था को लेकर भारतवर्ष में भी लगातार मंथन हो रहा है और यूजीसी की गाइडलाइन के अलावा नई शिक्षा नीति को लेकर विशेषज्ञ जुटे हैं। इन्हीं सबके बीच पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड की उच्चशिक्षा में भी संक्रमण काल सा दिखाई दे रहा है। वार्षिक परीक्षा से सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली और सुधार परीक्षा, विशेष सुधार परीक्षा, दूरस्थ शिक्षा जैसे सारे प्रयोग विद्यार्थियों के ऊपर होने के बाद अब कौशल विकास के अध्ययन पर जोर दिया जा रहा है। इतना सब होने के बावजूद विश्वविद्यालयों के परिसरों और इनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या घटती जा रही है। जिन शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिये बहुत दबाव होता था वहाँ सुविधाएं होने के बाद भी संख्या नहीं बढ़ रही है। जिन कालेजों में प्रवेश के लिये आन्दोलन की बात समाचारों में सुनाई दे रही है दरअसल यह वह भीड़ है जिनके पास और अवसर नहीं हैं। सीधी सी बात यह है कि बीए, एमए, एमकॉम, एमएससी जैसी पढ़ाई कर कौन सा रोजगार मिलने जा रहा है? इस प्रकार के सवालों के साथ बहस भी होने लगी है। सक्षम लोग दूसरे रास्ते तलाश रहे हैं।

इस बीच केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैकिंग फ्रेमवर्क में सौ शीर्ष कालेज और विश्वविद्यालयों की सूची में उत्तराखण्ड का कहीं नाम नहीं है। प्रदेश में 119 सरकारी कालेजों सहित 384 उच्च शिक्षा संस्थान संचालित हो रहे हैं। इनके विकास के लिये नवाचार, अनुसंधान के दावे बराबर होते रहते हैं। अब जबकि सच उजागर हो चुका है इस व्यवस्था पर कोरे दावे करने के बजाय व्यवहारिक बातें होनी चाहिये। उच्चशिक्षा खानापूरी के अड्डे न बनें, इनका परिणाम जनहित में हो।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

अफगानिस्तान भूकम्प से तबाही

काबुल। अफगानिस्तान में विगत दिवस आए भूकम्प से तबाही मच गई। 6 से अधिक की तीव्रता के भूकम्प से घर-इमारतें भरभराकर गिर पड़े। कुनार के सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक नूरगल जिले का पूरा गांव ही तबाह बताया जा रहा है। इस समय बिगड़े हुए हालातों पर बचावकर्मी जुटे हैं।

चीन ने बनाई पहली 6जी चिप

बीजिंग। चीनी वैज्ञानिकों ने दुनिया की पहली 6जी चिप तैयार की है, जिससे 5 हजार गुना तेज इंटरनेट गति मिलेगी। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार बीजिंग स्थित पेकिंग विश्वविद्यालय और हांगकांग की सिटी विवि के शोधकर्ताओं ने ऑल फ्रोक्वेंसी 6जी चिप विकसित किया है।

फर्जी पासपोर्ट से प्रवेश पर होगी जेल

नई दिल्ली। भारत में प्रवेश करने, देश में रहने या देश से बाहर जाने के लिए फर्जी पासपोर्ट या वीजा का उपयोग करते हुए पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति को अब सात साल तक की जेल और दस लाख रुपये तक के जुर्माने की सजा हो सकती है। विदेशियों और आव्रजन से सम्बन्धित मामलों को विनियमित करने वाला नया कानून लागू हो गया है।

करतारपुर गलियारा फिलहाल बन्द

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित पवित्र सिख तीर्थस्थान पर मरम्मत कार्य के कारण करतारपुर गलियारा परिसर श्रद्धालुओं के लिये बन्द है। हाल में यह परिसर जलमग्न हो गया था। सेना और नागरिक प्रशासन ने बाढ़ से प्रभावित इस क्षेत्र में मरम्मत कार्य जारी रखा है।

वियतनाम ने राष्ट्रीय दिवस वर्षगांठ मनाई

हनोई। वियतनाम समाजवादी गणराज्य ने अगस्त क्रान्ति और राष्ट्रीय दिवस की 80वीं वर्षगांठ मनाई। राजधानी हनोई के बा दीन्ह स्क्वायर पर एक भव्य सैन्य परेड के साथ इसका समारोह हुआ। इसमें 21 तापों की सलामी के साथ सशस्त्र बलों और पुलिस की टुकड़ियों के साथ सैन्य परेड हुई।

अश्लील सामग्री पर प्रतिबन्ध लगेगा

कैनबरा। आस्ट्रेलिया की सरकार ने घोषणा की है कि वह अपमानजनक पहुंच वाली तकनीकों को प्रतिबन्धित करने जा रही है, इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल भी शामिल है, जो अश्लील चित्र बनाने की क्षमता रखता है।

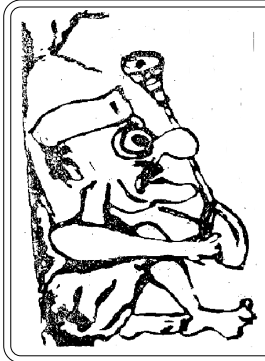

फसक

दाज्यू, अपनी करनी तो कर ही लेनी ठैरी

प्रयोग से ज्यादा दुरुपयोग होने लगा है बल

दाज्यू, भयंकर बरसात ने जो आफत मचाई है उसकी टूटन अभी तक है। पड़ोसी सब्बू और राधे गणेश चतुर्थी के दिन से गुस्से में हैं। दाज्यू, हमने बहुत समझाया कि गणपति बप्पा के नाम पर शुभ कार्य करो तो कहने लगे- 'हम जो चाहे करें।' तभी कह रहे हैं- अपनी करनी कर लेनी ठैरी। उसके बाद जिसके जो मन आए करने दो। देहरादून के दून अस्पताल में इंटरनेट के तार चूहे ने काट दिये। इससे करीब ढाई घण्टे तक नेटवर्क ठप रहा और मरीजों की भीड़ लग गई। सब अपने-अपने काम पर लगे ठैरे। फिर वो चाहे चूहा हो, खरगोश हो, गधा हो या हाथी।

दाज्यू, वैसे भी प्रयोग से ज्यादा दुरुपयोग होने लगा है बल। बबलू पहाड़ का इतिहास बता रहा है और रजनी कह रही है- 'जिसको चाहे निपटा देगी। उसके जसपुर, गौंडा, बदायूं तक पढ़ाई की है।' समय समय की बात है जब ढलान होती है तो चाल बदल जाने वाली ठैरी।

देहरादून में एसटीएफ ने जीवन रक्षक दवाइयां बनाने वाली ब्रांडेड कम्पनियों के उत्पादों की हूबहू नकल करके बाजार में बचेने के आरोप में चार कम्पनी मालिक और संयंत्र प्रमुखों को गिरफ्तार किया है। कह रहे हैं कि नियमों को ताक पर रख कर बिना लाइसेंस के फर्म दवा काम पर जुटी थी।

दाज्यू, हमारे गाँव में रामलीला की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं और तालीम मास्टर साज-बाज के साथ तैयार हैं लेकिन उन्हें इस बात का आश्चर्य हो रहा है कि प्रोफेसर बलकत इस बार अभिनय करने की जिद कर रहे हैं जबकि वह कभी भी किसी सामाजिक कार्यों, धार्मिक कार्यों में नहीं रहे थे। गोधन भी कह रहा है- 'बिल्डिंग निर्माण में बलकत मियाँ ने बहुत डकार मारी और खरीद के सामान का ज्यादातर निगल गया था।' दाज्यू, अब तो हम सोच में डूबे हैं कि निगल कर डकार मारने वाला रामलीला में क्या करेगा क्योंकि यह राम काज है और इस धार्मिक अनुष्ठान में बहुत ही श्रद्धावान लोगों को अवसर मिलता है। रील बनाने वाली भीड़ को सब पहचानने लगे हैं। हमें क्या करना है, बस यही कामना कर सकते हैं कि प्रभु राम सबकी भली करें। अपनी करनी कर लेते हैं बांकी वो जानें.....।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

स्पर्श गंगा शिक्षाश्री पुरस्कार के लिये शिक्षकों का चयन

हल्द्वानी। हिमालयन एजुकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट सोसाइटी (हड्र्स) ने स्पर्श गंगा पुरस्कार 2025 और स्पर्श गंगा प्रशस्ति पत्र 2025 के लिए चयनित शिक्षकों व समाजसेवियों के नामों की घोषणा की है। इस बार शिक्षा में नवाचार के लिये डॉ. ममता आर्या असि.प्रो. गढ़वाल विवि, पर्यावरण संरक्षण में वीरेन्द्र दत्त गोदियाल सहा.अध्यापक थलीसैण, समाजसेवा में धीरेन्द्र जोशी प्रवक्ता भुजियाघाट, सांस्कृतिक संरक्षण के लिये अनुराधा पाण्डेय प्रवक्ता कोटाबाग, ग्रामीण विकास व आजीविका सम्वर्धन के लिये प्रो. जय प्रकाश जायसवाल पन्तनगर विवि को चुना है।

वह यात्रा जिसमें.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

बोगड्यार, रिलकोट यात्रा के पड़ाव थे और जब एक स्थान से दूसरी जगह पूरा परिवार अपने सैकड़ों जानवरों के साथ जाता था, वह सब छोटे बच्चों के लिये खेल ही जैसा था। पड़ाव में रुकते ही कोई पानी की व्यवस्था में जुटता तो कोई रसोई संभालता। बच्चे खेल में मस्त हो जाते। चलते समय जिन महिलाओं या बुजुर्गों को दिक्कत होती उनसे कहा जाता भेड़ के पीछे-पीछे चलें, भेड़ धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। पड़ावों में खूब चहल-पहल होती थी।

बाला सिंह जी बताते हैं कि उनके ताऊ माधो सिंह जी को लोग माधो सिंह 'जाज' कहते थे। वह जड़ीबूटियों के जानकार थे और हड्डी आदि के बारे में भी ज्ञान था। किसी व्यक्ति या जानवर की किसी कारण कोई हड्डी टूट जाए तो वह सफल इलाज करते थे। लोग दूर-दूर उनके पास आया करते थे। एक बार स्यामाधुरा में भैस काफी गहरे में गिर गया उसे ताऊ ने ही ठीक किया। बाला सिंह जी बताते हैं कि पिता मेघ सिंह को होनी-अनहोनी का अससास काफी पहले से हो जाता था, कई घटनाएं इस प्रकार की हैं जब उन्होंने पहले ही पहचान लिया। एक बार उनकी भेड़ बकरी चुरा ली गई थीं लेकिन पिता जी ने उसका पता लगा लिया। जबकि उन भेड़ बकरियों के तीन-चार पुश्त तक हो चुके थे, उन्होंने सबको पहचान लिया।

वर्तमान में हल्द्वानी में रहने वाले बाला सिंह मर्तोलिया का बचपन देबीबगड़ में बीता और वहीं उन्होंने प्राइमरी की पढ़ाई की। हरसिंगिया बगड़ के ऊपरी क्षेत्र में यह प्राइमरी स्कूल है। इसके बाद इण्टर तक की पढ़ाई मुनस्यारी और फिर बीए की शिक्षा के लिये नैनीताल आए। तक पाइन्स, नैनीताल में आईटीआई की जानकारी होते ही उसमें प्रवेश ले लिया। टाइपिंग-शार्टहैंड के अभ्यासी बाला को 150 में से 125 नम्बर मिले और वह प्रथम श्रेणी में पास हो गये। पास होते ही हनुमानगढ़ी, नैनीताल की वेधशालामें उनकी नौकरी लगी। इसी समय रामनगर डिग्री कालेज में स्टेनों की पोस्ट निकली वह उसमें चयनित हो गये। सन् 1984 तक रामनगर में नौकरी की लेकिन बैंक का फार्म भर दिया। सन् 84 में फैजाबाद जगदीशपुर में नियुक्त हो गये। सन् 1985 तक लीड बैंक में क्षेत्रीय प्रबन्धक रहे। इसके बाद पन्तनगर सिडकुल शाखा में वरिष्ठ प्रबन्धक पद से सेवानिवृत्त हुए। अपने बचपन की पहाड़ से लेकर अभी तक की तराई की यादों के साथ मर्तोलिया जी सद् कार्यों में संलग्न हैं। तल्ला दुम्मर के वृजवाल परिवार में इनका विवाह हुआ था। श्रीमती माया देवी, पुत्र राहुल, गणेश सहित यह भले ही हल्द्वानी में निवास कर रहे हों लेकिन इनका मन हिमालय की वादियों में रमता है।

आपके पत्र

किशोर बालिकाएं सावधान रहें

आजकल समाज में ऐसा देखने में आया है जो बड़ी हृदय विदारक है कि किशोरी व युवती उम्र की बालिकाएं मनचले युवकों की मीठी बातों में फंसकर बिना माता-पिता की अनुमति के चली जाती हैं। बाद में लव जिहाद या धर्मांतरण तथा नाना प्रकार के अन्य अंजामों में फंसकर धोखा मिलता है और अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर बैठती हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि आलकल लिव इन रिलेशनशिव की प्रथा चल पड़ी है यह प्रथा कतई संस्कारवान नहीं होती है क्योंकि यह भारतीय संस्कृति से मेल नहीं खाती। लिव इन रिलेशन का हिन्दी शब्दार्थ रिश्तेदारी में रहना है लेकिन यह वास्तव में रिश्तेदारी में रहना नहीं यह अन्य ही हो रहा है। ऐसे रिश्ते संस्कारवान नहीं हो सकते। हमें अराजक तत्वों से सावधान होने की आवश्कता है। भूलकर भी ऐसे सम्बन्ध नहीं पालने चाहिये। अतएव सभी समझदार युवतियों को चाहिये कि वह किसी युवक से दोस्ती या पहचान से पहले उसके बारे में जान लें। हमेशा चरित्रवानों का साथ होना चाहिये। अपेक्षा है युवा अपने संस्कारों में रहेंगे।

-नन्दाबल्लभ पाण्डे
वरिष्ठ नागरिक, ज्योलीकोट(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पहल

जसपुर में रामलीला के मंचन में फिल्मी गीतों व डांस पर प्रतिबन्ध

पि.हि.प्रतिनिधि

जसपुर। श्री रामलीला के मंचन में इस बार फिल्मी गीतों और डांस पर पूर्णतया प्रतिबन्ध रहेगा। इसकी जगह सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर सनातन ध र्म के इतिहास को बताया जाएगा। कमेटी ने मंचन की रूपरेखा तैयार कर 21 सितम्बर से मंचन कराने का निर्णय लिया है।

मोहल्ला चैहानान की श्री रामलीला कमेटी के अध्यक्ष सनी पधान एवं कोषाध्यक्ष नवीन अग्रवाल ने बताया कि मंचन की तैयारियों को लेकर कमेटी की ओर से बैठक की गई। जिसमें तय किया गया कि विश्व प्रसिद्ध वृन्दावन के डॉ. स्वामी देवकीनन्दन महाराज की टीम के कलाकारों से रामलीला का मंचन कराया जाएगा। वृन्दावन की यह टीम गुजरात समेत विदेशों में भी मंचन कर चुकी है। रामलीला का मंचन 21 सितम्बर से शुरू होकर 3 अक्टूबर तक चलेगा।

इस अवसर पर बाजार चौक में रामलीला मंचन का आयोजन किया जाएगा। मंचन को ऐतिहासिक बनाने के लिए चालीस फीट लम्बा एवं 35 फीट चौड़ा मंच बनाए जाने की योजना है। इससे पहले छोटे मंच पर ही रामलीला मंचन होता था। इस बार रामलीला प्रांगण में स्टालों की की संख्या भी अधिक रहेगी और स्वच्छता का विशेष ध्यान है।

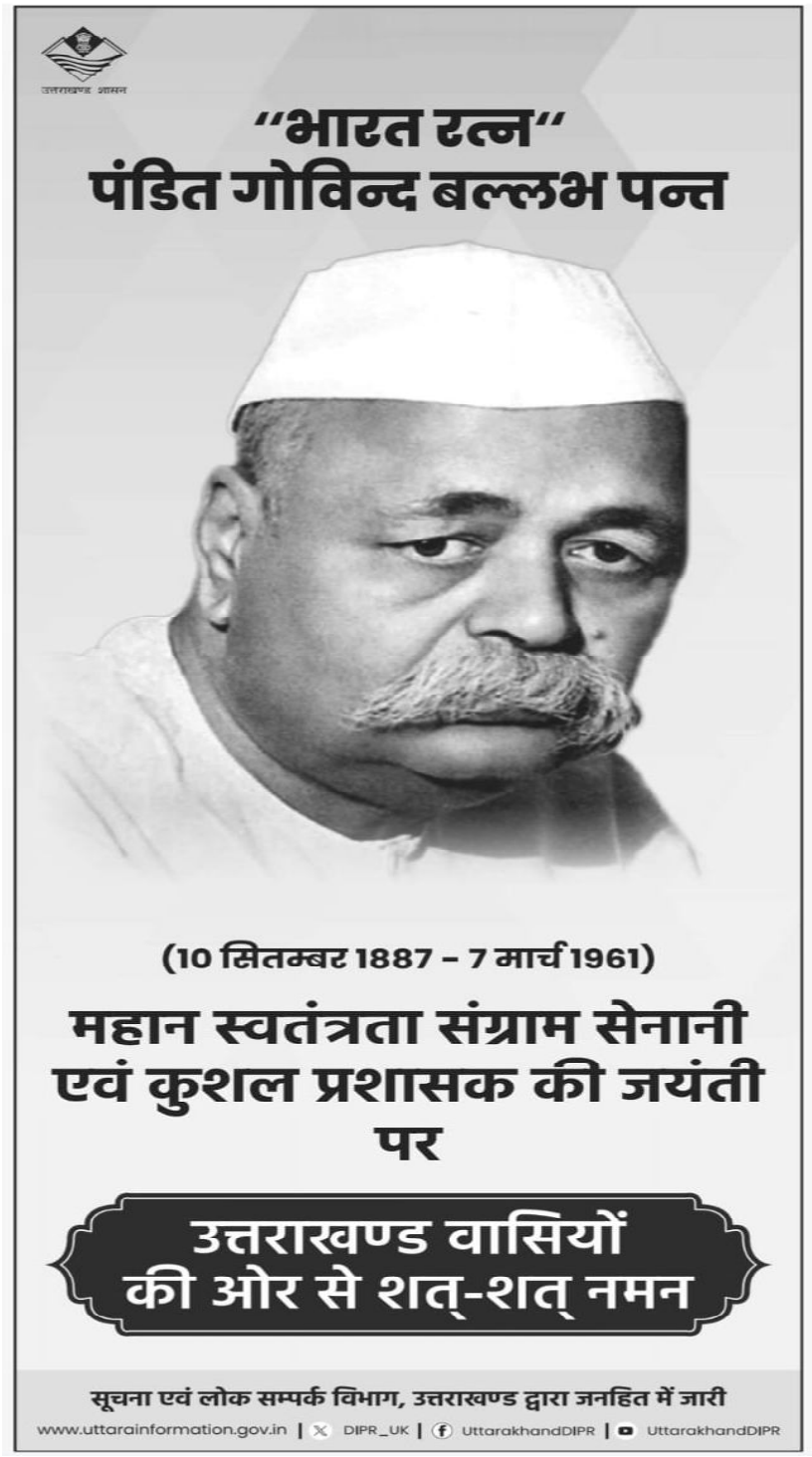

ज्योतिष की बातें- 246

15 सितम्बर 2025 को शुक्र शत्रुराशि सिंह में प्रवेश करेगा। शुक्र केतु से पीड़ित भी रहेगा अत: शुक्र अत्यन्त निर्बल रहेगा। इसलिये अगले 26 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में प्राय: सभी राशि के जातकों को शुभ फल देने में असमर्थ रहेगा।

15 सितम्बर 2025 को बुध अपनी उच्चराशि कन्या में प्रवेश करेगा वहाँ पर शनि की दृष्टि भी पड़ेगी साथ ही बुध अस्त भी रहेगा। इस कारण बुध कुछ निर्बल रहेगा फिर भी बुध बुद्धि, व्यापार, वाणिज्य, लेखन आदि अपने कारक विषयों में अगले 19 दिन सिंह, मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को शुभफल प्रदान करेगा।

17 सितम्बर 2024 को सूर्य समराशि कन्या में प्रवेश करेगा। वहाँ शनि की दृष्टि भी पड़ेगी अत: सूर्य निर्बल रहेगा। फिर भी अगले एक माह कर्क, मेष, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को सूर्य स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, आदि अपने कारक विषयों में अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

पितृ विसर्जन- अश्विन कृष्णपक्ष अमावस्या अपराह्न व्यापिनी तिथि में पितृ विसर्जन किया जाएगा। इसी के साथ ही पितृपक्ष का समापन हो जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 136

सन्तों के मध्य असहिष्णुता

आजकल किसी को भी किसी की बात सहन नहीं हो रही है। तुरन्त ही लोग विरोध, धरना, प्रदर्शन और मार-काट पर उतारू हो जा रहे हैं। मुझे याद है जब कक्षा में किसी का पेन चोरी हो जाता था और गुरु जी पूछते थे किसने चुराया? तो सबसे पहले वही लड़का खड़े होकर बोलता था, कि मैंने नहीं चुराया, जिसने कि पेन चुराया होता था। अपराधी व्यक्ति तुरन्त बोल पड़ता है और हल्ला भी अधिक मचाता है।

आश्चर्य तो तब होता है जब सन्तों के मध्य भी असहिष्णुता दिखाई पड़ती है। सभी सन्तों का बोलने का तरीका अलग-अलग होता है। सबकी शब्दावली अलग-अलग होती है, सभी का ज्ञान-विज्ञान भी भिन्न होता है और प्रत्येक का कार्यक्षेत्र भिन्न होता है। कोई प्रवचन अच्छा देते हैं, कोई पौराणिक कथा में विशेषज्ञ है, तो कोई समाज सुधारक हैं, कोई धार्मिक बातें अधिक बताते हैं, तो कोई ज्योतिष या आध्यात्म के जानकार हैं। इस कारण अपनी विशेषज्ञता के कारण सन्तों की किसी एक विषय में बात सही तो दूसरी में गलत भी हो सकती है।

जो सन्त जहाँ के मूल रूप से रहने वाले होते हैं उस जगह की भाषा का प्रभाव तो रहता ही है। एक जगह जो शब्द बहुप्रचलित होते हैं वही शब्द दूसरी जगह गाली जैसे प्रतीत होते हैं। किसी बात को हिन्दी में कहा जाए तो सामान्य, संस्कृत में कहा जाए तो विद्वतापूर्ण और उसी को यदि उर्दू में कहा जाए तो अशोभनीय लगने लगती है। सन्तों को एक दूसरे के शब्दों के भावार्थ को समझना चाहिए । भावार्थ को त्यागकर शब्दार्थ को ग्रहण करने वाला व्यक्ति मूर्ख होता है। फिर यदि किसी की बात में कोई सैद्धान्तिक मतभेद है तो उसका शास्त्रार्थ के द्वारा खण्डन करना चाहिए न कि धरना-प्रदर्शन और धमकी के द्वारा। सन्तों में सहिष्णुता एक आवश्यक गुण होता है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

आदेश का अनुपालन न होने पर नाराजगी, एकता मंच ने ज्ञापन भेजा

नैनीताल। कार्मिक संगठनों के कार्यबहिष्कार व हड़ताल को लेकर एक जनहित याचिका में उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय द्वारा सात साल पूर्व पारित आदेश का धरातलीय अनुपालन नहीं होने पर उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच ने हैरानी व नाराजगी व्यक्त की है।

एकता मंच ने मुख्य सचिव को ज्ञापन भेजकर आगाह किया है कि न्यायालय के आदेश के परिपालन में यदि एक माह के भीतर हर विभाग में शिकायत निवारण समितियों का गठन नहीं हुआ तो अल्पकालिक नोटिस पर व्यापक आन्दोलन किया जायेगा।

एकता मंच के संस्थापक अध्यक्ष रमेश चन्द्र पाण्डे एवं महासचिव दिगम्बर फुलोरिया की ओर से मुख्य सचिव को भेजे ज्ञापन में कहा गया है कि न्यायालय द्वारा 29 अगस्त 2018 को पारित आदेश में हर विभाग में शिकायत निवारण समिति का गठन कर समिति की हर तीसरे माह बैठक आहूत किये जाने के निर्देश दिये गये थे। कार्मिक एवं सतर्कता विभाग द्वारा 13 दिसम्बर 2018 को पत्र जारी कर सभी विभागों को न्यायालय के इस आदेश का परिपालन करने हेतु निर्देश दिये गये थे। आदेश का परिपालन कराने हेतु 4 अनुस्मारक पत्र भी दिये गये लेकिन इसका क्रियान्वयन किसी भी विभाग में नहीं हुआ जिससे समूचे कार्मिक समुदाय में सन्तोष व्याप्त है। श्री पाण्डे ने आदेशों के परिपालन हेतु जारी आदेशों की अनदेखी के लिये जवाबदेही तय करने व शिकायत निवारण को कहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

टास्क फोर्स ने शुरू किया पौधारोपण

धारचूला। कैलास मानसरोवर यात्रा मार्ग पर लगातार हो हरे भारी भूस्खलन को प्राकृतिक तरीके से रोकने के लिये भारतीय सेना की ईको पर्यावरण बटालियन अपना योगदान दे रही है। ईको टास्क फोर्स ने मिट्टी कटाव रोकने के लिये बांज, बुरांश, फल्याट जैसे मिश्रित पौधरोपण किया है।

पतंजलि में पूर्व सैनिकों को उपचार

हरिद्वार। भूतपूर्व अशंदायी स्वास्थ्य योजना (ईसीएचएस) के लिये भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग तथा पतंजलि योग ग्राम के बीच अनुबन्ध पर हस्ताक्षर हुए जिसके अन्तर्गत पूर्व सैनिकों और उनके परिजनों का निःशुल्क उपचार अब पतंजलि में हो सकेगा।

सड़कों की दुर्दशा को लेकर धरना

भीमताल। सड़कों की मरम्मत, डामरीकरण और सुधारीकरण की मांग को लेकर स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने लोनिवि भवाली में धरना-प्रदर्शन किया। नगर पालिका सभासद रामपाल गंगोला के नेतृत्व में हुए प्रदर्शन में ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि विभागीय अधिकारियों को कई बार सूचना, ज्ञापन और अन्य माध्यमों से अवगत कराया जा चुका है।

वन भूमि पर कब्जा रोकने को ज्ञापन

थल। नगर के दशैली गांव के सरपंच जगदीश चन्द्र पाठक ने वन भूमि में कब्जा कर रहे लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है। एसडीएम बेरीनाग को भेजे पत्र में श्री पाठक ने कहा है कि उनके क्षेत्र के वन पंचायत के अधीन आने वाले भूमि पर सरकारी धन को ठिकाने लगाकर अवैध निर्माण किया जा रहा है।

स्वयंसेवी शिक्षक

उत्तरकाशी। आपदा प्रभावित स्यानाचट्टी और आसपास के चार गाँवों में पढ़ाई जारी रखने के लिये शिक्षाविभाग ने स्वयंसेवी शिक्षकों की व्यवस्था की है।

लगातार घायल करता रहा भूस्खलन

धराली, थराली, कनलगढ़ घाटी, पूर्वी बांगर से लेकर जगह-जगह करोड़ों का नुकसान और जनहानि भी हुई

इस बार की अतवृष्टि पहाड़ को लगातार घायल करता रहा है। उत्तरकाशी के धराली और चमोली के थराली में तबाही के बाद रुद्रप्रयाग के पूर्वी बांगर क्षेत्र, बागेश्वर के कनलगढ़ घाटी सहित जगह जगह करोड़ो का नुकसान हो चुका है और जनहानि भी हुई। उच्चहिमालय क्षेत्र में सीजन की पहली बर्फबारी हो चुकी है। बदरीनाथ की पहाड़ियों पर बर्फ की सफेद चादर सी बिछ गई। जिससे तापमान गिरने से ठण्ड बढ़ी है।

धराली-थराली की बर्बादी के बाद जैसे-तैसे लोगों के जीवन को पटरी पर लाने की तैयारी हो रही थी इस बीच भारी बारिश और अतिवृष्टि से थराली के जोला, बुडजोला गांवों में दरारें आने से दर्जनभर परिवार खतरे की जद में आ गए। घनियाल गदेरे से लगातार भू कटाव हो रहा है। गौचर में राजकीय पालीटेक्निक संस्थान और उसके नीचे बसी आवादी भवन खतरे की जद में हैं। देवाल क्षेत्र में लिंगड़ी गांव के थैलीपातल तोक में दो मकान खतरे की जद में हैं। रह रहे दो परिवारों ने अन्यत्र शरण ले रखी है। रुद्रप्रयाग से सूचना आई कि टेंडवाल गाँव में मकान और चमोली के मोपाटा में भूस्खलन से मकान ढह चुका है। मूसलाधार बारिश से रुद्रप्रयाग जिले के पूर्वी बांगर क्षेत्र में तबाही मची। छेनागाड़ पड़ाव पूरी तरह तबाह हो चुका है। यहाँ मलबे से 15 से अधिक दुकानें और मकान बह गए। सड़क और पैदल मार्ग क्षतिग्रस्त हो चुके हैं।

बागेश्वर जिले के कपकोट तहसील क्षेत्र में कनलगढ़ घाटी के सुमटि, बैसानी और पौंसारी गाँव के खाईइजर तोक में दो मकान बह गये। मलबे में दबकर बसन्ती देवी और उनकी जेठानी बचुली देवी की मौत हो गई। इसमें पिता-पुत्र समेत तीन लोग लापता हो गये। सयालब से कुलदेवी की डोली लेकर वापस जा रहे दस लोगों के वाहन पर रुद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड हाईवे पर मुनकटिया के पास बोल्डर गिने से दो की मौत हो

कर्णप्रयाग में जगह-जगह भूस्खलन

ज्योतिर्मठ से नन्दप्रयाग तक बारिश की तबाही

ऐलागाड़ की घटना भी चेतावनी है

ऊंची चोटियों पर हिमपात भी हुआ

स्वाला और क्वारब खतरनाक बने हैं

लोहाघाट के मंगोली में ६ मकान ध्वस्त

चुकुम में दो घर बहे, कोसी में जानवर

प्रशासन चारों ओर अलर्ट दिखाई दिया

बदरीनाथ की पहाड़ियों पर सफेद बर्फचादर

गई। मूसलाधार बारिश के साथ ही भूस्खलन ने जो तबाही मचाई है उसका असर जानवरों में भी अथाह है। मुनस्यारी से बकरियों के दबकर मौत की सूचना पर चिकित्साधिकारी योगेश शर्मा ने बताया कि पशुधन प्रसार अधिकारी भगवान सिंह पंचपाल सहित टीम छिरकारी गई जहाँ मलबे में भेड़ बकरियों की मौत की सूचना थी। बताया कि हादसे में 137 भेड़ बकरियों की मृत्यु हो गई और 40 करीब घायल हो चुकी हैं। एनएचपीसी की 280 मेगावाट की धौलीगंगा जलविद्युत परियोजना के ऐलागाड़ स्थित पावर हाउस की सुदंग के मुहाने पर भारी भूस्खलन भी चेतावनी के रूप में है। इसमें फंसे 19 अधिकारी कर्मचारी 24 घण्टे बाद बाहर निकाले जा सके थे।

बारिश की अति से कर्णप्रयाग में जगह-जगह भूस्खलन हुआ है। अपर बाजार में काफी मलबा आया। नारायणबगड़ बस स्टैण्ड मुख्य बाजार में भूधंसाव से 2 दुकानें क्षतिग्रस्त हो गई। कर्णप्रयाग गोचर के कमेड़ा में भारी मलबा आने से रास्ताव खेतों में बर्बादी हुई है। सिमली जखेड़ गधेरे के पास भी यही हाल है। सीमान्त क्षेत्र ज्योजिर्मठ से लेकर नन्दप्रयाग तक बारिश की तबाही हुई है। मलारी राजमार्ग पर तमक नाले का पुल बहने से नीती घाटी का सम्पर्क कटा हुआ है। नन्दानगर में भूधंसाव से बैंड बाजार और आसपास 34 परिवारों को विस्थापन के लिए मजबूर होना पड़ा।

टनकपुर-चम्पावत एनएच में स्वाला और अल्मोड़ा-हल्द्वानी एनएच पर क्वारब भूस्खलन से खतरनाक बने हैं। प्रशासन ने इन इलाकों पर हाईअलर्ट करते हुए निगरानी रखी है लेकिन प्रकृति के आगे किस समय कैसा हो जाए कहना कठिन है। बार-बार मलबा बोल्डर आने दोनों स्थानों पर यातायात प्रभावित हुआ है।

लोहाघाट के मंगोली में मलबा आने से बाखली के 6 मकान ध्वस्त हो गये। सूचना पर प्रशासन की टीम ने आपदा प्रभावितों को अन्यत्र व्यवस्था करवाई। बाराकोट के नौमाना में भी प्रधानमंत्री योजना से बनी घर की दीवार क्षतिग्रस्त हो गई जिससे आवास को खतरा है।

मूसलाधार बारिश की इस आफत में कोसी नदी में जानवर बहते देखे गये। हाथियों तक के बहने के वीडियो वायरल हुए हैं। उफान पर आई कोसी नदी चुकुम वासियों के लिये कहर बनकर टूटी। इसमें दो मकान बह गये और अन्य को खतरा है। मौसम की मार बनी है लेकिन देखा गया है कि निर्देशानुसार प्रशासन अलर्ट रहा और अधिकारी अपनी टीम के साथ बराबर दुर्गम और कठिन जगहों पर तक राहत के लिये पहुँचे।

केदारनाथ रोपवे के विकास पर करार

देहरादून। पर्वतमाला परियोजना के अन्तर्गत केदारनाथ और हेमकुण्ड साहिब में रोपवे के लिये सरकार और नेशनल हाईवे लॉजिस्टिक्स मैनेजमेंट लि. के बीच सीएम पुष्कर धामी की उपस्थिति में सचिवालय में समझौता हुआ। इस मौके पर सीएम ने कहा कि इससे यात्रियों को दर्शन में काफी सुविधा होगी।

2027 हरिद्वार कुम्भ की तैयारियां

देहरादून। हरिद्वार में 2027 मं होने वाले कुम्भ की तैयारियों की ओर भी शासन का ध्यान है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कुम्भ मेले को भव्य रूप देने के लिये अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। कहा कि कुम्भ से सम्बन्धित स्थायी निर्माण कार्यों को अक्टूबर 2026 तक पूरा करें।

सचिवालय मं सीएम ने उच्चस्तरीय बैठक में कुम्भ के लिये की जाने वाली व्यवस्थाओं की समीक्षा की। मेला सम्बन्धित सभी कार्य विस्तारित क्षेत्र और मास्टर प्लान को ध्यान में रखकर करने को कहा।

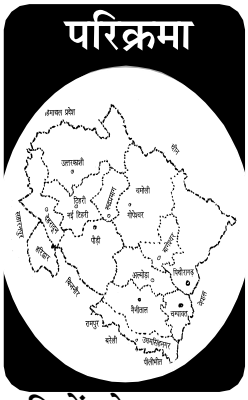

नदियों के अध्ययन को कार्ययोजना

देहरादून। प्रदेश की सभी बड़ी नदियों के अध्ययन को कार्ययोजना तैयार होगी। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने सचिवालय में हुई राज्य कार्यकारिणी समिति की बैठक में अधिकारियों को इसके निर्देश दिये।

मसूरी की मॉल रोड अब कहलाएगी आन्दोलनकारी मॉल रोड

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

अतीत के पन्नों में सितम्बर का महीना उत्तराखण्ड वासियों के लिए मानो काले दिवसों से कम नहीं है, पहले 1 सितम्बर साल 1994 को खटीमा गोलीकाण्ड और फिर ठीक एक दिन बाद दो सितम्बर को हुआ मसूरी गोलीकाण्ड, तब इन दोनों घटनाओं ने उत्तराखण्ड वासियों को झकझोर कर दिया था।

इस बार मसूरी गोलीकांड की 31 वीं बरसी है। दो सितम्बर का दिन आज भी मसूरीवासियों की धड़कनें तेज कर देता है। आन्दोलन की अलख जगाने के लिए पुरुषों के साथ महिलायें भी राज्य आन्दोलन में कूद पड़ी। 2 सितम्बर को भी उत्तराखण्ड राज्य प्राप्ति आन्दोलन अन्य दिनों की तरह ही शान्तिपूर्वक चल रहा था। मसूरी के झूलाघर के पास संयुक्त संघर्ष समिति के कार्यालय में आन्दोलनकारी इकट्ठा होकर एक सितम्बर को खटीमा में हुए गोलीकाण्ड के विरोध में अनशन कर रहे थे। इस दौरान पीएसी और पुलिस ने मिलकर राज्य आन्दोलन को आगे बढ़ा रहे मसूरी के निहथे आन्दोलनकारियों पर बिना चेतावनी के ताबड़तोड़ गोलियां बरसा दी। जिसमें बेलमति चौहान और हंसा धनैई शहीद हो गईं। इस गोलीकाण्ड में मसूरी के छह आन्दोलनकारी बलबीर सिंह नेगी, धनपत सिंह, राय सिंह बंगारी, मदनमोहन ममगाईं, बेलमती चौहान और हंसा धनाई शहीद हो गए, मसूरी के डीएसपी रहे उमाकान्त त्रिपाठी ने गोली चलाए जाने का विरोध किया तो उन्हें भी गोली मार दी गई, उन्हें भी बाद में शहीद का दर्जा मिला। इसके बाद पुलिस ने आन्दोलनकारियों की धरपकड़ शुरू की। इससे पूरे शहर में अफरातरी मच गई। क्रमिक अनशन पर बैठे 5 आन्दोलन कारियों को पुलिस ने एक सितम्बर की शाम को ही गिरफ्तार कर लिया था। जिनको अन्य गिरफ्तार आन्दोलनकारियों के साथ पुलिस लाइन देहरादून भेजा गया। वहाँ से उन्हें बरेली सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया था। वर्षों तक कई आन्दोलन कारियों को सीबीआई के मुकदमे झेलने पड़े थे। बाद में फिर आन्दोलन ने तेजी पकड़ ली और नौ नवम्बर साल 2000 को 42 शहादत के बाद हमें अलग राज्य मिला। दुर्भाग्य है की आज तक खटीमा औरमसूरी गोली काण्ड के दोषियों को सजा तक नहीं मिल पाई है। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री ने मसूरी गोलीकाण्ड की 31वी बरसी पर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए कई ऐतिहासिक घोषणाएं की।

भारी बारिश के बीच आयोजित समारोह में उन्होंने मसूरी की मॉल रोड का नाम बदलकर आन्दोलनकारी मॉल रोड करने का ऐलान किया। यह सड़क उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के लिए हुए आंदोलन को समर्पित होगी। इस घोषणा से वहाँ मौजूद लोगों में गर्व के साथ उत्साह व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने शहीद स्मारक पर शहीदों को नमन किया। उन्होंने 2 सितम्बर 1994 को उत्तराखण्ड के इतिहास का काला दिन बताया, जब निहत्थे आन्दोलनकारियों पर पुलिस ने गोलियां चलाई थी। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार शहीदों के बलिदान को कभी नहीं भूलेगी और उत्तराखण्ड को सशक्त, पारदर्शी व संस्कृति से समृद्ध बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। आज की तारीख में इन्हीं बलिदानों की वजह से उत्तराखण्ड का अस्तित्व हम लोग देख पा रहे हैं। अगर ये लोग नहीं होते, तो आज हम उत्तराखण्ड का अस्तित्व नहीं देख पाते। मसूरी के पटरी व्यापारियों के लिए भी मुख्यमंत्री ने बड़ी घोषणा की। उन्होंने वेंडर जोन बनाने की घोषणा की, जिससे व्यापारियों को स्थायी जगह, सम्मानजनक आजीविका और सुरक्षा मिलेगी। कहा ये व्यापारी हमारे शहर की आत्मा हैं, इनके रोजगार को संरक्षित करना हमारा दायित्व है। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री ने मसूरी के विकास के लिए कई मांगें उठाईं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

व्यास ने अन्याय.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

बता जाता है। एक बार जुआ हो चुका है। युधिष्ठिर सब कुछ हार चुके हैं। द्रौपदी का चीरहरण हो चुका है। पर सब की सहमति से युधिष्ठिर को सबकुछ वापस मिल चुका है। इससे दुर्योधन की बेचैनी जब फिर से बढ़ी तो उसने धृतराष्ट्र से कहा कि वे फिर से युधिष्ठिर को जुआ खेलने का आदेश जारी करें। उन्होंने जारी किया तो सभापर्व अध्याय 75 में गान्धारी ने जिन साफ शब्दों में धृतराष्ट्र को चेतावनी दी, वह पढ़ने लायक है। दुर्योधन की कुटिलता और धृतराष्ट्र की हमेशा उसकी हाँ में हाँ मिलाने की कुप्रवृत्ति का जैसा उसने पर्दाफाश किया है वह पढ़ने लायक है और इसके आधार पर एक ऐसी नारी का चरित्र गौर करने लायक है जो हस्तिनापुर के राजप्रासाद के षड्यन्त्रों के महासागर में नैतिकता का छोटा-सा द्वीप बनकर हमारे सामने उभर आती है। वह लगभग विदुर का ही एक संस्करण दिखाई देती है।

दूसरा प्रसंग उद्योग पर्व (अध्याय 129) में है जब कृष्ण युद्ध टालने के उद्देश्य से शान्ति स्थापना का अन्तिम प्रयास करने हस्तिनापुर आ चुके है। और धृतराष्ट्र को काफी सलाह दे चुके हैं। तब गान्धारी परिदृश्य पर आती हैं। इसमें खास बात यह है कि ऐसे नाजुक मौके पर गान्धारी की सलाह लेने के लिए धृतराष्ट्र उसे बुलावा भेजते हैं। इसका मतलब यह है कि गान्धारी की प्रतिभा का सिक्का ऐसा था कि राजनीतिक विचार-विमर्श के इस अति महत्वपूर्ण मोड़ पर धृतराष्ट्र को गान्धारी की सलाह की जरूरत अनुभव हुई। गान्धारी आई, उसने दुर्योधन को बुलावा भेजा और फिर उसे ऐसा फटकारा, ऐसे नीतिवाक्य बताए, राजनीति के ऐसे गुर समझाए कि गान्धारी पूरी महाभारत की एक अतिविशिष्ट महिला पात्र के रूप में हमारे सामने अवतरित होती है।

तो क्या यह माना जा सकता है कि ऐसी गान्धारी तब चुप रही होगी जब दुर्योधन अपनी किशोरावस्था में पाण्डु पुत्रों को परेशान करता रहता था? क्या गान्धारी ने अपना कोई विचार तब नहीं रखा होगा जब दुर्योधन ने पाण्डुपुत्रों और कुन्ती को वारणावत भेज दिया? यह हो नहीं सकता कि गान्धारी के रहते हस्तिनापुर के राजप्रासाद में जुआ खेला गया और वह चुप रही और यह तो असम्भव ही है कि गान्धारी के दुष्ट बेटे कुरुकुलवधू द्रौपदी का चीरहरण ठीक राजसभा में कर रहे हों। इसमें से कोई भी प्रसंग सम्भव नहीं है और यह भी नितान्त असम्भव है कि उसने अपने भाई शकुनि के षड्यन्त्रों पर कभी भी अंकुश लगाने का प्रयास न किया हो। पर विडम्बना देखिए कि जो वेदव्यास भीष्म के हाथों अम्बा को मिले अन्याय के कारण भीष्म को क्षमा नहीं करते, वही वेदव्यास गान्धारी की भूमिका के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाए।

वेदव्यास ने बेशक न्याय न किया हो, पर देश के लोकमानस ने तो पूरा-पूरा न्याय किया है। गान्धारी का एक विशिष्ट चित्र लोकमानस में बना है।

इस चित्र में उसे पतिव्रताओं के एक बड़े शिखर पर बिठा दिया गया है। पतिव्रता नामक मूल्य पर आज समाज में जो भी राय बन रही हो, हो सकता है कि ठीक ही बन रही हो, पर हमारी संकट यह है कि हम किसी युग के व्यक्तित्व और योगदान को मूल्यांकन उसी युग के मूल्यों और मानदण्डों के आधार पर ही करने को विवश हैं। गान्धारी को आज की कसौटियों पर कसकर हम उससे अन्याय क्यों करें? पतिव्रता धर्म के एक शिखर पर बैठी इस महानारी गान्धारी को लेकर लोकमानस में एक कथा अंकित हो चुकी है। जब दुर्योधन सारा युद्ध हार चुका और अकेला बच गया तो गान्धारी की इच्छा हुई है कि वह अपने सौ पुत्रों में से अकेले बचे दुर्योधन को आँखों की पट्टी खोलकर देखे। विवाह के बाद वह पहली बार आँखों की पट्टी खोल रही थी। उसने दुर्योधन को बुलावा भेजा और आदेश दिया कि वह अपनी माँ की आँखों के सामने नितान्त निर्वस्त्र होकर आए।वह उसे उस रूप में निहारना चाहती है जिस रूप में वह अपने जन्म के समय था।

जन्म के तुरन्त बाद अपने पुत्र या पुत्र को देखने से बड़ी आकांक्षा किसी माँ की और क्या हो सकती है?दुर्योधन ने माँ की इच्छा का सम्मान तो किया, पर पूरा सम्मान नहीं किया। वह लगभग निर्वस्त्र होकर आया, पूरी तरह से नहीं। कटि और जाँघों को उसने संकोचवश वस्त्रों से ढक दिया। गान्धारी ने आँखों से पट्टी उतार कर उसे देखा। कहते है। कि जहाँ-जहाँ वस्त्र नहीं थे वहाँ-वहाँ गान्धारी की तेजस्वी दृष्टि पड़ने से अंग वज्र के समान कठोर हो गए और गदायुद्ध में भीम के गदाप्रहारों को आसानी से झेल गए। पर जहाँ दुर्योधन ने वस्त्र धारण कर रखे थे, वहाँ चूंकि गान्धारी की तेजस्वी दृष्टि नहीं पड़ सकी, अत: शरीर के वे भाग दुर्बल रहे और ठीक उन्हीं शरीरांगों पर गदाप्रहार करके भीम ने दुर्योधन के प्राण ले लिए।

इस विराट चरित्र वाली गान्धारी के बस की ही बात थी कि उसके पुत्रों और सर्वस्व को नष्ट कर देने वाले महाभारत युद्ध के बाद उसने उन पाण्डवों के पास जाकर रहने का फैसला किया जिन्होंने उसके पुत्रों का वध किया। आप कह सकते है। कि वह उसकी विवशता थी। पर हमारा निवेदन है कि वह चाहती तो युद्ध के तुरन्त बाद धृतराष्ट्र के साथ वनगमन कर सकती थी, जो उसने (आश्रमवासिक पर्व अध्याय 2-4) भीम के वाग्वाणों से तंग आकर अपने जीवन की चौथ में किया।

(साभार नवभारत टाइम्स)

राजनीति के तीर

हरक रावत लगातार बरस रहे हैं

दून में भाजपा-कांग्रेस घमासान के बाद से अन्य जगह भी प्रदर्शन

नैनीताल/देहरादून। पंचायत चुनाव के बाद से भाजपा-कांग्रेस जिस प्रकार से एक दूसरे पर प्रहार करते हुए दिखाई दे रहे हैं, वह सब 2027 के विधानसभा चुनाव का जोर माना जा रहा है। इस समय सबसे ज्यादा चर्चित हरक सिंह रावत हैं क्योंकि वह लगातार अपने तीखे बयानों व जोश से हलचल मचा रहे हैं। उनके बयानों पर पलटवार करते हुए भाजपा के नेताओं ने भी चुटकी ली है लेकिन हरक जिस प्रकार से तीखे बोल बोल रहे हैं वह सभी नेताओं के लिये सवाल खड़ा करने वाले हैं चाहे वह स्वयं हरक सिंह ही क्यों न हों।

देहरादून के राजपुर रोड में भाजपा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के आमने सामने हुई धक्का-मुक्की और हंगामे के बाद से अन्य जगह भी प्रदर्शन हुए हैं। शुरुआत कांग्रेस मुख्यालय के पास हंगामे से शुरु हुई थी और सड़क पर दोनों पार्टियों के कार्यकर्ताओं के भिड़ने से तनाव देखते हुए पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। भाजपा नेता राहुल पंवार, विधायक खजान दास, सविता कपूर सहित कई नेता इसमें शामिल दिखाई दिये। राजनीति के यह तीर अभी आगे भी लगातार चलते रहेंगे।

नैनीताल भाजपाइयों ने कांग्रेस व राहुल गांधी का पुतला फूंकते हुए कहा कि नरेन्द्र मोदी के लिये अपमानजनक बातें राहुल गांधी को बन्द करनी चाहिये। कहा यदि माफी नहीं मांगी तो कार्यकर्ता आन्दोलन और तेज करेंगे।

इस बीच अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से पहुंची ऑब्जर्वर राजस्थान राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष रेहाना रयाज चिस्ती ने उत्तराखण्ड आकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं से विचार विमर्श किया। और पत्रकारों को बताया कि संगठन के जिला अध्यक्ष पद के लिये अलग अलग क्षेत्रों के लिये कई नाम चयनित किये जाएंगे। राय शुमारी के बाद नाम तय होगा।

भाजपा की तैयारियों में भी कोई कमी नहीं है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट ने अपने विधायकों से अनुशासन में रहने को कहा है। खनन सहित कई तरह के सवालों से अपनी ही सरकार को घेर रहे पूर्व शिक्षा मंत्री अरविन्द पाण्डे को पार्टी मुख्यालय बुलाकर समझाया। गदरपुर विधायक पाण्डे लगातार अपने तीखे बयानों से बेहद चर्चा में रहे। प्रदेश अध्यक्ष से भेंट के बाद उनके बयानों में नरमी देखी जा रही है।

इस बीच देहरादून में कांग्रेस उग्र होती दिख रही है। महिलाओं द्वारा जबर्दस्त आन्दोलन करते हुए भाजपा मुख्यालय की ओर कूच किया। गोबर के मटके फोड़ते हुए भाजपा कार्यालय के शुद्धिकरण की बात कही।

16 शिक्षकों को शैलेश मटियानी पुरस्कार

देहरादून। इस बार शिक्षक दिवस अवसर पर 16 शिक्षकों को शैलेश मटियानी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में प्राइमरी शिक्षा के 9, माध्यमिक शिक्षा के 5, डायट और संस्कृति शिक्षा के 1-1 शिक्षक शामिल हैं। इनमें डॉ.योगेन्द्र प्रसाद गौड़ लालढांग पौड़ी, रम्भा शाह मरोड़ा गैरसैंण, मुरारी लाल राणा बड़ेथी उत्तरकाशी, ठाट सिंह झबरेड़ीकला हरिद्वार, रजनी ममगाई मुनिकीरेती, मिली बागड़ी पौंठी रुद्रप्रयाग, नरेश चन्द्र पासम लोहाघाट, दीवान सिंह कठायत उडियारी बेरीनाग, विनीता खाती गाड़ी ताड़ीखेत, पुष्कर सिंह नेगी सुरखेत पौड़ी, गीतांजलि जोशी डुंडा उत्तरकाशी, सुनीता भट्ट देहरादून, प्रकाश चन्द्र उपाध्याय बापरू चम्पावत, दीपक बिष्ट शेर ताड़ीखेत अल्मोड़ा, राजेश कुमार पाठक डीडीहाट और बलदेव प्रसाद चमोली ऋषिकुल विद्यापीठ हरिद्वार शामिल हैं।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अपनी दुदबोली को जीना होगा तभी संस्कृति जीवित रहेगी

भूपाल सिंह लसपाल

अभी हाल में भाषा दिवस पर जगह-जगह आयोजन हुए, बहुत अच्छी बात है। अपनी बोली-भाषा को लेकर सचेत रहना चाहिय। अपनी दुदबोली को जीना होगा तभी हमारी संस्कृति जीवित रहेगी। लेकिन कौन-सी भाषा की बात की जाए। यह कहना बहुत ही अतिशयोक्तिपूर्ण प्रसंग हो सकता है। आज हम अपने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपनी ही सुन्दर, सहज व सरल मातृभाषा कुमाउंनी के भीतर ही बोली जाने वाली भिन्न भिन्न बोलियों को भावनात्मक रूप से समझने का प्रयास करें तो पायेंगे कि हमारी अपनी ही दुदबोली भाषा की कितनी दयनीय स्थिति है जिसे हम अपने देवतुल्य पूर्वजों व बुजुर्गो से सुनते सीखते और विरासत में ग्रहण करते हुए अभी तक बोल पा रहे हैं। आज भी हमारे अपने घर परिवार एवं समाज में अपनी ही दुदबोली मातृभाषा का सुचारू रूप से आदान-प्रदान न हो पाने का जिन-जिन परिस्थितियों को हम भावनात्मक रूप से स्वीकार करने के लिए बाध्य हो रहे है उसका मूल कारण

है हम लोगों का अपनी मातृ-देव जन्मभूमि से पलायन कर शहरों के चकाचौंध में विलीन होकर अपनी मूल सांस्कृतिक विरासत से नितान्त रूप से कटकर पृथक हो जाना है।

इसके लिए हम सहजता से अपनी नई पीढ़ी पर कोई भी दोषारोपण नहीं कर सकते हैं। क्योंकि जिन शहरों के चकाचौंध में हम रह रहे है उसी वातावरण में उन्हें भी रहने के लिए विवश होना पड़ा है। इसलिए वहाँ का आवरण तो उन्हें स्वत: ही प्राप्त हो जाता है। यूं कहिए कि किसी भी शहर की अपनी कोई ऐसी आत्मिक भाषा परिभाषा स्पष्ट नहीं होती है। इन शहरों में केवल कामचलाऊ और सांकेतिक भाषाओं का ही इस्तेमाल किया जाता है। इन चकाचौंध भरे शहरों में भले ही आलीशान घर-मकान या महल बनाकर रह लीजिए लेकिन उसमें लेशमात्र भी नये बच्चों के बीच रहकर जब तक अपने गाँव घरों की सांस्कृतिक विरासत की चर्चा और अपनी बोली भाषा दुदबोली में बात नहीं की जायेगी तब तक हम नई पीढ़ी के बच्चों से कोई उम्मीद भी नहीं कर सकते हैं। क्योंकि वे वही सुनते और आत्मसात करते हैं जिन बोली भाषा एवं संस्कारों का हम परिवारजनों से परस्पर सम्वाद के लिए आसानी से प्रयोग करते है।

आज शहरों में निवासरत हर प्रवासी के घर-परिवार में केवल और केवल एक ऊबाऊ व कामचलाऊ भाषा में ही सम्वाद स्थापित किया जाता है। बच्चे अपने घर-परिवार से बाहर स्कूल कालेज या विभिन्न शिक्षण संस्थानों में प्रवेश पाकर भी उन्हीं कामचलाऊ हिन्दी-अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हुए बड़े होते हैं। जबकि आज भी हमारे मूल गाँव घरों में हमारे बड़े-बुजुर्ग उन्हीं बोली भाषा में सम्वाद करते है जिन्हें हम सुनना चाहते हैं और अपने बच्चों से भी यही उम्मीद करते हैं कि वह भी अपनी गाँव की भाषा में सम्वाद करें भले ही वह खुद हिन्दी-अंगेजी के साथ दुनिया भर की ऊल-जलूल भाषा अपने घर-परिवार में बोलते रहें। उसे स्वयं भी यह आभास हो जाए तभी बेहतर होगा।

आज हम एक सेतु के रूप में उस पीढ़ी के दहलीज में विराजमान है जहाँ एक तरफ हमारे पूर्वजों व बुजुर्गो की मृदुल स्मृति-शेष रूपी वास्तविक विरासत है और दूसरी तरफ अपनी नई पीढ़ी को उन महत्वपूर्ण रीति-रिवाजों को भावनात्मक रूप से हस्तांतरित किये जाने की जिम्मेदारी भी है जिन्हें सहेजकर हम अभी तक अपने घर-परिवार तथा समाज में चल फिर रहे हैं। इसीलिए इन्हीं बोली भाषा के साथ अपने सांस्कृतिक विरासत तथा पुराने गाँव घरों में ढांचागत खण्डहर हो रहे (थात-कुरि) से सम्बन्धित अवशेषों तथा विलुप्त हो रहे अपने पुरातन धरोहरों सहित समस्त जानकारियों को भली-भाँति इन नई पीढ़ी तक पहुँचाये जाने की अति शीघ्र आवश्यकता है। हम नई पीढ़ी को तभी समझा सकते हैं जब हम अपने घर-परिवार में केवल उस बोली भाषा में सम्वाद स्थापित करने का प्रयास करेंगे जिसका हम उनसे उम्मीद करते है। भले ही अपने स्कूल, कालेज, शिक्षण संस्थानों तथा कार्य क्षेत्रों में हिन्दी अंग्रेजी के साथ अन्य कामचलाऊ भाषा का प्रयोग करना पड़े लेकिन अपने घर-परिवार तथा गाँव समाज में अपनी ही बोली भाषा को प्राथमिकता दी जाए तभी अपनी बोलचाल की भाषा दुदबोली तथा अटूट सांस्कृतिक परम्परा के अस्तित्व को बचाया जा सकता है। जब हम स्वयं जिम्मेदार होकर अपने घर-परिवार से इस प्रथा को पुन: प्रज्ज्वलित करने के लिए अपने अन्तर्मन से सक्रिय रूप से कार्य कर पाएंगे। तभी इस निर्णय को भावनात्मक रूप से बल मिल सकता है। आज हर जगह हमारे संगठनों के सांस्कृतिक मुख्यालय स्थापित हो तो जाते हैं लेकिन किसी भी संगठन का मुख्य आसय स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं हो पाता है। शुरूआत में अपनी बोली भाषा बचाने तथा अपनी चिरपरिचित पहचान बचाने के लिए अपनी माटी से जुड़ने का बड़े जोशो-खरोश से आह्वान किया जाता है लेकिन कोई भी सन्देश कार्यरूप में परिणित नहीं हो पाता है। फिर धीरे-धीरे संगठन के सभी निर्देशित क्रियाकलाप निष्क्रियता की ओर संकेत दृष्टिगोचर हो जाते हैं। एक तरफ हमारे लोगों का बड़े-बड़े पदों में रहते हुए अपने गाँव घर समाज के प्रति भी कोई जवाबदेही सुनिश्चित नहीं होती है। जब सेवानिवृत्त हो जाते है फिर तब उनका डबडबाट शुरू हो जाता है। उनके उच्च पदों में रहते हुए समाज के असहाय लोगों की एक आशा भरी निगाहें उनको भक्तिभाव से ताकती और निहारती रहती है कि उनके द्वारा कभी ना कभी अपने लोगों का उद्धार अवश्य होगा। परन्तु नतीजा केवल आश्वासन तक सीमित रह जाता है। इसलिए जब तक सक्षम हैं और शरीर में श्वांस मौजूद है तब तक एक सकारात्मक सम्वाद को सक्रिय बनाए रखिए। यही वक्त की जरूरत है।

(ग्राम-सरमोली, पट्टी-तिकसैन।
तहसील- हिमनगरी मुनस्यारी
हाल निवास-पिथौरागढ़)

बुर्फू में मल्ला जोहार विकास समिति का वार्षिक अधिवेशन

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति ने इस बार भारत तिब्बत चीन सीमा के निकट निवास करने वाले 14 राजस्व ग्रामवासियों की समस्याओं को लेकर सीमान्त के ऐतिहासिक ग्राम बुर्फू में अपना वार्षिक अधिवेशन किया। इसमें कुछ विभागों के अधिकारी भी पहुंचे। जिसके समक्ष सड़क, सिंचाई, नदी-नालों के ऊपर पुल निर्माण, वाइब्रेंट विलेज में शामिल करने से विषयों को लेकर विचार विमर्श किया गया।

बैठक में बार्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन वर्तमान में 1447 बीआरओ बीसीसी दरकोट पिथौरागढ़ टनकपुर के अन्तर्गत हस्तांतरित के बारे में चर्चा हुई तो बताया कि बोग्ड्यार में रोड की स्थिति गड़बड़ा चुकी है। प्रधानों ने कहा सड़क कार्य दुरुस्त करने के अलावा संचार व्यवस्था होनी चाहिये ताकि विपरीत परिस्थिति में रहने वाले क्षेत्रवासियों के साथ सौतेला व्यवहार न हो। समिति की ओर से श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने सीएम के विशेष प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहे केदार वृजवाल से भी अनुरोध किया कि वह सीमान्त की इन समस्याओं के निवारण के लिये प्रयास करेंगे।

तय किया गया कि आने वाले समय में जोहार के अन्य ग्रामों में भी इस प्रकार के वार्षिक अधिवेशन कार्यक्रम कर जागरूकता की जाएगी।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)